http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2023) वर्ष 3, अंक 9, 9-16

Article ID: 299

मूंग का आधुनिक खेती

रमेश कुमार गुप्ता[1], *दिनकर[2], आनंद कुमार[3], निखिल कुमार[4] एवं रणजीत प्रताप पंडित[5]

[1]उद्यान (शाक एवं पुष्प) विभाग, बी. ए. यू, सबौर, भागलपुर - (813210)
[2]पादप प्रजनन और आनुवंशिकी विभाग, बी. ए. यू, सबौर, भागलपुर - (813210)
[3]विषय वस्तु विशेषज्ञ (फसल उत्पादन), कृषि विज्ञान केंद्र, पिपराकोठी, पूर्वी चंपारण - (845429)
[4]प्रसार शिक्षा विभाग, बी. ए. यू, सबौर, भागलपुर - (813210)
[5]उप निदेशक उद्यान, बामेती, पटना, - (801506)

❖ **- खेत की तैयारी :-**

मूंग की फसल के लिए गहरी जल निकास वाली दोमट और हल्की दोमट भूमि सबसे अच्छी होती है। लेकिन मूंग की खेती हल्की, कम गहरी एवं पथरीली भूमि से लेकर भारी भूमियों में भी की जा सकती है। क्षारीय व लवणीय भूमि मूंग की खेती के उपयुक्त नहीं है। मूंग की अच्छी फसल लेने के लिए गर्मी में एक बार मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई करें। बाद में देशी हल या कल्टीवेटर से एक-दो बार जुताई करके पाटा लगायें और खेत समतल कर लें। तैयार खेत में ढ़ेले और खरपतवार नहीं होने चाहिए। खेत में जल निकास का भी उचित प्रबंध होना चाहिए।

ट्राइकोडरमा 2.5 किलो प्रति एकड़ + गला हुआ गोबर 50 किलो मिलाएं और फिर जूट की बोरियों से ढक दें। फिर इस घोल को नमी वाली ज़मीन पर बिजाई से पहले खिलार दें। इससे मिट्टी में पैदा होने वाली बीमारियों को रोका जा सकता है।

❖ **मूंग - बीज और बीजाई**

बीजों को मिट्टी में पैदा होने वाली बीमारियों से बचाने के लिए फफूंदीनाशक जैसे कि कार्बेनडाज़िम 12 प्रतिशत + मैनकोज़ेब 63 प्रतिशत डब्लयू पी (साफ) 2 ग्राम से प्रति किलो बीजों को बिजाई से 1 दिन पहले पहले उपचार करें। दीमक वाली ज़मीन पर बिजाई के लिए बीजों को क्लोरपाइरीफॉस 20 ई सी 10 मि.ली. से प्रति किलो बीजों का उपचार करें।

बुवाई से पहले मूंग के बीज को 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम या थाइरम प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से बीजाई से 1 दिन पहले उपचारित करना चाहिए। दलहनी फसलों के बीज के साथ राइजोबियम जीवाणु मिलाने से फसल में वायुमंडलीय नाइट्रोजन

संचित करने की क्षमता बढ़ती है। दलहनी फसलें वायुमंडल से नाइट्रोजन लेने की क्षमता रखती हैं इसलिए इनमें नाइट्रोजन खाद का प्रयोग कम होता है। मूंग बीज को राइजोबियम जीवाणु से उपचारित करने के लिए 1 लीटर उबलते पानी में 250 ग्राम गुड़ घोल लें और ठंड़ा होने पर उसमें एक पैकेट राइजोबियम कल्चर मिला लें। इस घोल को बीजों पर इस तरह डालें कि सभी बीज समान रुप से उपचारित हो जाएं। इसके बाद बीज को छाया में सुखाकर शीघ्र बुवाई के काम में लें। इससे चने की पैदावार 7 प्रतिशत तक वृद्धि होती है ।

❖ **बीज की मात्रा**

मूंग की फसल की खरीफ में 5-6 किलोग्राम प्रति एकड़ और जायद में 8-10 किलोग्राम प्रति एकड़ बीज की आवश्यकता होती है।

❖ **फासला**

खरीफ में पौधों की बढ़वार अधिक होने और कतार से कतार की दूरी अधिक रखने से बीज दर कम रखते हैं। जायद में बढ़वार अधिक नहीं होने से कतार से कतार की दूरी भी कम रहती है। कतार से कतार की दूरी जायद में 25-30 सेंटीमीटर और खरीफ में 30-40 सेंटीमीटर रखी जाती हैं। कतारों में बीज से बीज की दूरी 10-15 सेंटीमीटर रखें।

❖ **बीज की गहराई**

बीज ऊरने की गहराई 5 सेंटीमीटर से अधिक नहीं होनी चाहिए।

❖ **बिजाई का समय**

खरीफ मूंग की फसल को मानसून आने पर जून के अंत या जुलाई के आरंभ में बोया जाता है। जबकि जायद की फसल मार्च के अंत तक बोयी जानी चाहिए।

❖ **मूंग - किस्में**

ML 2056: यह खरीफ ऋतु के अनुकूल है। इसके पौधे मध्यम कद के होते हैं। यह किस्म 75 दिनों में कटाई के लिए तैयार हो जाती है। इसकी हरी फली में 11-12 दाने होते हैं। यह चितकबरा रोग और पत्तों पर बनने वाले धब्बा रोगों को सहने योग्य है। इसके इलावा यह रस चूसने वाले कीड़े जैसे कि तेले और सफेद मक्खी को सहनेयोग्य है। इसकी औसतन पैदावार 4.5 क्विंटल प्रति एकड़ है।

ML 818: यह खरीफ की ऋतु में उगाई जाने वाली किस्म है। पौधे का कद दरमियाना होता है। यह किस्म 80 दिनों में पक जाती है। प्रत्येक फली में 10-11 दाने होते हैं। यह किस्म पीला चितकबरा रोग और पत्तों के धब्बा रोग की प्रतिरोधक है। इसकी औसतन पैदावार 4.9 क्विंटल प्रति एकड़ है।

PAU 911: यह किस्म खरीफ ऋतु की किस्म है। यह 75 दिनों में पककर कटाई के लिए तैयार हो जाती है। इसकी फली में 9-11 दाने होते हैं। इसकी औसतन पैदावार 4.9 क्विंटल प्रति एकड़ है। इसके दाने दरमियाने मोटे और हरे होते हैं।

SML 668: यह किस्म गर्मी की ऋतु में लगाई जाती है। इसके बूटे छोटे होते हैं और यह 60 दिनों में पक जाती है। इसकी फलियां लंबी और हर फली में 10-11 दाने होते हैं। यह जुएं और मूंग के चितकबरे रोग को सहनेयोग्य है। इसकी औसतन पैदावार 4.5 क्विंटल प्रति एकड़ है।

SML 832: यह गर्मी ऋतु में बीजने वाली किस्म है। इसका बूटा दरमियाने कद का होता है। यह किस्म 60 दिनों में पक जाती है। इसकी प्रत्येक फली में 10 दाने

होते हैं। इसके दाने दरमियाने और चमकीले हरे रंग के होते हैं। इसकी औसतन पैदावार 4.6 क्विंटल प्रति एकड़ है।

❖ मूंग - पोषक तत्व प्रबंधन

मूंग की फसल के लिए 10-12 किलोग्राम नाइट्रोजन तथा 20-30 किलोग्राम फॉस्फोरस प्रति एकड़ बुवाई के समय ऊर कर देना चाहिए। पोषक तत्वों की यह मात्रा 50-60 किलोग्राम डी.ए.पी. देकर पूरी की जा सकती है। मिट्टी की जांच के आधार पर यदि जीवाशम खाद की कमी हो तो 4 टन सड़ी हुई गोबर की खाद या 2 टन वर्मीकम्पोष्ट प्रति एकड़ देनी चाहिए। भूमि में पोटाश की कमी होने पर पोटाश भी देना आवश्यक हो जाता है। पोटाश की कमी वाले क्षेत्रों में 30 किलोग्राम म्यूरेट आफ पोटाश प्रति एकड़ का प्रयोग करें। जिंक की कमी वाले क्षेत्रों में 10 किलोग्राम जिंक सल्फेट प्रति एकड़ हर तीसरे वर्ष में देना चाहिए। उन इलाकों में जहां भूमि में गंधक यानि सल्फर की कमी है वहां बीजाई से पहले खेत में 150-200 किलोग्राम जिप्सम भूमि में मिलाना चाहिए।

❖ मूंग - जल प्रबंधन

खरीफ मूंग की फसल में सिंचाई वर्षा पर निर्भर करेगी। भूमि की तैयारी के लिए एक सिंचाई कर सकते हैं। वर्षा न होने पर आवश्यकतानुसार खरीफ में सिंचाई करनी चाहिए। फसल के वृद्धि काल, फूल आने और फलियां बनने के समय भूमि में पर्याप्त नमी रहना चाहिए। वर्षा ऋतु में खेत से उचित जल निकास की व्यवस्था होना अत्यंत आवश्यक है। मूंग में सिंचाई लम्बी क्यारियां बनाकर करनी चाहिए। क्यारियां नहीं बनाने से खेत में ढ़लान पर पानी जमा होने की संभावना रहती है। पानी के ठहराव की जगह फसल की बढ़वार और उपज में कमी होती है। जायद की फसल में मूंग को 4-6 सिंचाईयों की आवश्यकता होती है।

❖ मूंग-खरपतवारप्रबंधन

बुवाई कतारों में करें जिससे निराई-गुड़ाई करने में आसानी हो। मूंग की फसल में आवश्यकतानुसार खरपतवार निकलना चाहिए। सामान्यतौर पर 2 निराई-गुड़ाई पर्याप्त रहती है। पहली निराई-गुड़ाई बुवाई के 20-25 दिन बाद और दूसरी 35-40 दिन के बाद करें। मूंग की फसल में रासायनिक विधि द्वारा खरपतवार नियंत्रण के लिए फ्यूक्लोरोलिन 45 ई.सी. 800 मिली लीटर प्रति एकड़ की दर से लगभग 300 लीटर पानी में मिलाकर बुवाई से पहले भूमि में एकसाथ एकसार छिड़काव कर मिट्टी में मिला दें। यदि ऐसा न कर सकें तो बिजाई के बाद दो दिनों में पैंडीमैथालीन 1 लीटर को 100 से 200 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ में स्प्रे करें या एलाक्लोर डेढ़ लीटर प्रति एकड़ की दर से अथवा 600 मिली लीटर बेसालिन 300 लीटर पानी में मिलाकर बुवाई से तुरंत बाद बीज जमाव से पहले छिड़काव करें।

❖ **गेरूआ या रस्ट रोग**

लक्षण एवं नुकसान - पत्ती की ऊपरी सतह पर हल्के हरे पीले छोटे-छोटे धब्बे दिखाई देते हैं एवं पत्ती की निचली सतह पर भूरे लाल उभरे हुये फफोले के रुप में ये धब्बे होते हैं। रोग का प्रकोप अधिक फैलने पर फली एवं तने पर भी ये फफोले देखे जा सकते हैं। प्रकोप अधिक होने पर पत्ती की दोनों सतहों पर रस्ट रोग के फफोले फैल जाते हैं। इस रोग के प्रभाव से पत्ती सिकुड़ी एवं मुड़ी हुई हो जाती है।

रोग नियंत्रण

1. बीज को फफूँदनाशक दवा बाविस्टीन (2.5 ग्राम) प्रति किलोग्राम की दर से उपचारित करना चाहिये। 2. खड़ी फसल में कवकनाशी जिनेब (2.5 ग्राम) प्रति लीटर पानी के हिसाब से 750 लीटर घोल बनाकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

पीला चित्रवर्ण या पीला मोजैक विषाणु रोग

लक्षण एवं नुकसान - शुरूआती लक्षण में पीले छोटे धब्बे नयी पत्ती पर फैले हुये दिखाई देते हैं बीमारी फैलने पर ये धब्बे बड़े आकार के होकर पुरी पत्ती को पीला कर देते हैं। प्रभावित पत्तियाँ पीला-चित्तीदार लक्षण प्रदर्शित करते हैं। पौधों की बढ़वार रूक जाती है। फूल एवं फली की संख्या कम हो जाती है फली आकार में छोटी एवं पीला रंग लिये हुये होती है।

रोग नियंत्रण –

1. मूंग की किस्में जो मोजैक विषाणु रोग के प्रति अवरोधी है को लगावे।
2. इमिडाक्लोरप्रिड के 5 मिली लीटर प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीज उपचार कर बुवाई करें।
3. यह बीमारी सफेद मक्खी द्वारा फैलती है अत: इसे रोकने हेतु कीटनाशी दवा जैसे त्रियाजोफोस 500-600 मिली लीटर या फास्फामिडान 100 मिली लीटर के 300 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ की दर से 2 से 3 बार छिड़काव करें।

लीफकर्ल (झुर्रीदार पत्ती रोग)

लक्षण एवं नुकसान - नये पत्ती पर हरे रंग की कमी के रुप में पत्ती की मध्य शिराओं पर दिखाई देते हैं। इस रोग में पत्तियाँ मध्य शिराओं से ऊपर की ओर मुड़ जाती है और नीचे की पत्तियाँ अंदर की ओर मुड़ जाती हैं। पत्ती की निचली सतह की शिरायें लालिमा लिये हुये भूरे रंग की हो जाती हैं। बुवाई के कुछ हफ्ते बाद ही इसके लक्षण पौधों में दिखने लगते हैं। जिसमें पौधों की बढ़वार रूक जाती है और पौधों की मृत्यु हो जाती है।

रोग नियंत्रण –

1. कैप्टान 50 डब्ल्यू.पी. या थिरम के 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीज उपचार कर बुवाई करें।
2. यह विषाणु (वायरस) जनित रोग है जिसका फैलाव थ्रिप्स कीट द्वारा होता है। थ्रिप्स के नियंत्रण के लिये एक ग्राम एसीफेट या 2 मिली लीटर डाइमेथोएट प्रति लीटर पानी के हिसाब से 300 लीटर घोल बनाकर प्रति एकड़ छिड़काव करें।
3. मूंग की समय से बुवाई करें।

सर्कोस्पोरा पत्ती धब्बा रोग

लक्षण एवं नुकसान - इस रोग के लक्षण छोटे-छोटे धब्बों के रुप में पत्ती की सतह पर देखे जा सकते हैं। ये धब्बे हल्के भूरे रंग के तथा इनका किनारा लाल-भूरा रंग लिये हुये होता है। ये धब्बे फलियों एवं शाखाओं पर भी देखे जा सकते हैं। प्रकोप अधिक होने पर ये धब्बे पूरे पौधों में फैल जाते हैं एवं पत्ती सिकुड़ कर छोटी हो जाती है।

रोग नियंत्रण –

1. बीज जमाव के बाद मिट्टी से बाहर निकालने के पहले खरपतवारनाशी पेंडिमिथालिन के उपयोग एवं खुर्पी द्वारा खेत में खरपतवार की सफाई रखें।
2. बीज उपचार कार्बेण्डाजिम के 1 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से करने के बाद बुवाई करें।
3. मूंग के साथ अन्य फसलें जैसे अनाज एवं मोटे अनाज लगायें।
4. मूंग के खेत की सतह पर पुवाल या पौधों के सूखे तनों से ढकें, (मल्च का इस्तेमाल करें) ।
5. काबेन्डाजिम (0.05 प्रतिशत) में 200-225 लीटर घोल बनाकर प्रति एकड़, बुवाई के 30 दिन बाद छिड़काव करें।

जीवाणु पत्ती धब्बा रोग

लक्षण एवं नुकसान - पत्ती की सतह पर बहुत सारे भूरे रंग के सूखे हुये धब्बे दिखाई पड़ते हैं। प्रकोप बढ़ने पर ये धब्बे पूरी पत्ती पर फैल जाते हैं। जिससे सभी पत्तियाँ पीली दिखाई देती हैं एवं पत्तियाँ गिर जाती हैं। पत्ती की निचली सतह पर देखने पर ये धब्बे लाल रंग लिये हुये होते हैं। इसका प्रभाव तने एवं फलियों पर भी देखा जा सकता है।

रोग नियंत्रण –

1. बीज को 500 पी.पी.एम. स्ट्रैप्टोसाइक्लीन घोल में 30 मिनट के लिये डुबाकर रखें।
2. खड़ी फसल पर इस रोग से बचाव के लिए दो छिड़काव 1 ग्राम स्ट्रैप्टोसाइक्लीन एवं 3 ग्राम कॉपर आक्सीक्लोराइड प्रति लीटर पानी के हिसाब से दोनों को आपस में मिलाकर 750 लीटर घोल बनाकर 12 दिन के अंतराल में छिड़काव करें।

एनथ्रेक्नोज (श्यामवर्ण रोग)

लक्षण एवं नुकसान - यह रोग बीज पत्र, तना, पत्ती एवं फलियों पर होता है। संक्रमित भाग पर अनियमित आकार के भूरे धब्बे लालिमा लिये हुये दिखाई देते हैं जो कुछ समय बाद गहरे रंग के हो जाते हैं।

रोग नियंत्रण –

1. संक्रमित पौधों को नष्ट कर देना चाहिये।
2. बीजों को बोने से पूर्व कैप्टान अथवा थाइरम (2.5 ग्राम) या बाविस्टीन (1.5 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज दर से उपचारित कर बोयें।
3. फसल चक्र अपनायें।
4. स्वस्थ बीज का उपयोग करें।

अल्टरनेरिया पत्ती धब्बा रोग

लक्षण एवं नुकसान - पत्ती की सतह पर भूरे रंग के धब्बे दिखाई देते हैं। प्रारंभिक अवस्था में ये धब्बे गोल एवं छोटे भूरे रंग के होते हैं। बाद में ये छल्ले के रुप में गहरे भूरे रंग का आकार ले लेते हैं। संक्रमित भाग पत्ती से अलग होकर गिर जाता है। इस रोग के बीजाणु (कोनिडिया) रोग प्रभावित पौधों के अवशेष एवं ठुण्ठ पर तथा खरपतवारों पर जीवित रहते हैं। इनकी बढ़वार के लिये 70 प्रतिशत आपेक्षिक आर्द्रता एवं 12 से 25 डिग्री तापमान उपयुक्त होता है।

रोग नियंत्रण –

1. खेतों को साफ-सुथरा रखें।
2. थायरम75 डबल्यू.पी. या कप्तान 75 डब्ल्यू.पी. के 2.0-2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से बीजोपचार कर बीज की बुवाई करें।
3. फसलों में जिनेब 80 डब्ल्यू.पी. या जिरम 80 डब्ल्यू.पी. 2 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से 250-300 लीटर घोल बनाकर प्रति एकड़ छिड़काव करने से इस बीमारी पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

एफिड (माहो)

लक्षण एवं नुकसान - निम्फ एवं वयस्क पत्तियों तनों फूलों एवं दानों पर समूह में एकत्रित होकर रहते हैं। व्यस्क काले रंग की चमकदार लंबी एवं कभी-कभी पंख लिये हुये होती है। निम्फ में वैक्सयुक्त परत चढ़ी होती है जिसके कारण वह धूसर मटमैली दिखाई देती है। निम्फ एवं व्यस्क भारी संख्या में पत्तियों टहनियों एवं दानों पर दिखाई देते हैं। यह कोमल तनों एवं पत्तियों का रस चूसते हैं। कोमल पत्तियाँ इनके प्रभाव से सिकुड़ी हुई दिखाई देती हैं।

कीट नियंत्रण –

1. शीघ्र या समय से बुवाई करें।
2. नाइट्रोजन एवं पानी की कम मात्रा का इस्तेमाल करें।
3. यदि इन कीटों का प्रकोप फलियों पर दिखाई दे तो कीटनाशी का उपयोग करें।
4. फास्फोमिडॉन 100 मिली लीटर या एमामेक्टिन बेंजोएट 5% एस.जी. 100 ग्राम या नीम का तेल 2% 200 लीटर पानी में प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।

फली छेदक

लक्षण एवं नुकसान - इस कीट की सूँडी हरा-भूरा रंग लिये हुये रोमयुक्त गहरे पीले धारीनूमा होती है। इसका वयस्क मध्यम आकार का हल्के भूरा उभार लिये हुये मूखवाला होता है। इसके वयस्क मोथ का अगला पंख सुनहरा हरा-पीला एवं पिछला पंख गहरा भूरा रंग का होता है। इसकी सुंडियाँ पत्तियों पर खुरचन नूमा संरचना बनाकर दानों की फलियों को छेदकर बीज को खाती हैं। इसका सिर अंदर की तरफ एवं शरीर का भाग बाहर की तरफ लटका रहता है। फलियों पर गोल छेद दिखाई पड़ते हैं।

कीट नियंत्रण –

1. गहरी ग्रीष्मकालीन जुताई करें जिससे लार्वा एवं प्यूपा सूर्य के प्रकाश द्वारा ऊपरी सतह पर आकर परभक्षी द्वारा नष्ट हो जायें।
2. फसलों की समय पर या जल्द बुवाई करें और जल्दी तैयार होने वाली प्रजातियाँ लगाएँ।
3. मूंग के खेत के चारों ओर ज्वार, बाजरा या मक्के की 2-3 कतारों की बुवाई करें जिससे कीट का प्रकोप इन्हीं फसलों पर हो और मूंग की फसल को कम नुकसान हो।
4. फैरोमोने ट्रैप 50 मीटर की दूरी पर प्रति एकड़ 2 ट्रैप लगाएँ। प्रति 5 एकड़ क्षेत्र में 1 प्रकाश ट्रैप लगाकर इस कीट के वयस्क मोथ को पकड़ कर नष्ट कर सकते हैं।
5. एन.एस.के.ई. 5% के 12-15 लीटर या नीम का तेल 3000पी.पी.एम. के 5-6 लीटर मात्रा को 250-300 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ छिड़काव करें।
6. इस कीट द्वारा यदि प्रति पौधा 10 फलियाँ प्रभावित हों तो इनका नियंत्रण रासायनिक कीटनाशी द्वारा करना चाहिए।
7. कीट के प्रकोप दिखाई पड़ने पर, एमामेक्टिन बेंजोएट 5 एस.जी. के 50-60 ग्राम या प्रोफेनोफॉस 50ई.सी. के 600 या क्लोरपाइरिफॉस 20% ई.सी. 1000 मिली लीटर मात्रा को 250-300 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ छिड़काव करें।

सफेद मक्खी

लक्षण एवं नुकसान - इस कीट के वयस्क कीट 1-2 मिली मीटर आकार के हल्के पीले रग के होते हैं। इनके पंखों के उपर सफेद मोमयुक्त परत होती है। दिन के समय यह पत्तियों की निचली सतह पर पाई जाती है। शिशु गोल या अण्डाकार एवं एवं हरे सफेद रंग लिये होते हैं। यह कीट तीन प्रकार से फसलों को नुकसान पहुँचाता है। वयस्क एवं शिशु दोनों ही पत्तियों की निचली सतह से रस चूसते हैं। जिससे पौधों की वृद्धि रूक जाती है। पत्तियां पीली होकर गिरने लगती है तथा फूल एवं फलियाँ झड़ जाती हैं। रस चूसने के साथ-साथ ये कीट एक प्रकार का चिपचिपा पद्रार्थ निकालते रहते हैं जो नीचे की पत्तियों पर जमा हो जाते हैं। इस पद्रार्थ पर काली फफूँद उगने लगती हैं ये कीट पीला मोजैक बीमारी के वाहक का कार्य करते हैं।

कीट नियंत्रण –

1. बीजोपचार डाईमेथोएट 30 ई.सी. + त्रियाजोफोस 40 ई.सी. के 5 मिली लीटर या इमिडाक्लोरप्रिड 17-8 एस.एल. के 3 मिली लीटर प्रति किलोग्राम बीज की दर से करने के बाद बुवाई करें।
2. सफेद मक्खी के नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोरप्रिड 17-8एस.एल. के 60 मिली लीटर मात्रा को 300 लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिनों के अंतराल से दो छिड़काव करें।
3. कीटनाशी एसिफेट 75एस.पी. के 250-300 ग्राम, एन.एस.के.ई. 5% के 12-15 लीटर या नीम का तेल 3000पी.पी.एम. के 5-6 लीटर मात्रा को 250-300 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ छिड़काव करें।

फली चूसक

लक्षण एवं नुकसान - इसकी व्यस्क मध्यम आकार की होती है सिर उदर एवं वक्ष गहरे काले रंग का होता है। पंख में नारंगी रंग के पट्टीनूमा संरचना लिये हुये होते हैं। इसकी व्यस्क मृदा में अण्डे देती है। व्यस्क भृंग हरे फलियों के फूलों एवं हरे दानों पर आक्रमण करते हैं और उनके रस को चूसते हैं। इससे दाने भरने की अवस्था प्रभावित होती है। इनके प्रभाव से उपज में कमी और दानों की गुणवत्ता प्रभावित होती है। मूंग की फसल पर कई प्रकार के फली चूसक कीटों का प्रभाव देखा गया है। इनमें प्रमुख हैं : हरे सब्जी फली चूसक, लालधारी कवचधारी फली चूसक, बड़े भूरे फली चूसक एवं छोटे भूरे फली चूसक।

कीट नियंत्रण –

1. नाइट्रोजन का समुचित उपयोग करें।
2. फ्युरोमॉन एवं प्रकाश प्रपंच का उपयोग रात्री के समय व्यस्क कीटों की संख्या को नियंत्रित करने के लिये इस्तेमाल करें।
3. जालीयुक्त नेट का इस्तेमाल करें।
4. वयस्क कीटों को कैरोसिन युक्त पानी में डालकर नष्ट करें।
5. कीटों द्वारा फसल में 2% से अधिक नुकसान दिखने पर फोरेट 10 जी 4 किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से खेत में बिखेरें।
6. क्लोरपाइरिफॉस 20% ई.सी. 1000 मिली लीटर 250-300 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करने से भी फली चूसक कीटों पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

तंबाकू की सूँडी

लक्षण एवं नुकसान - व्यस्क पतंगों के अगले पंख सुनहरे भूरे रंग के सफेद धारियाँ लिये होती है। पिछले पंखों पर भूरे रंग की शिराएं होती है। इल्लियाँ हरे मटमैले रंग की होती है जिनके शरीर पर पीले हरे एवं नारंगी रंग की लम्बी धारियां होती हैं। उदर के प्रत्येक खण्ड के दोनों ओर काले धब्बे होते हैं। इल्ली प्रारंभिक अवस्था में समुह में रहकर पत्तियों के पर्ण हरित पद्रार्थों को खाती हैं। जिससे पौधों की सभी पत्तियाँ सफेद जालीनूमा दिखाई देती हैं।

कीट नियंत्रण –

1. एक ही खेत में लगातार मूंग की खेती नहीं करें।
2. खेत से खरपतवार समय से हटाएँ और सफाई रखें।
3. फसल में जालीयुक्त सफेद पत्तियाँ जिनमें छोटी सूंडियाँ समूह में रहती हैं तो तोड़कर नष्ट कर दें।
4. इस कीट के प्रकोप को देखने पर कीटनाशी या ट्राइजोफॉस 40 ई.सी. 300 मिली लीटर 300 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।